17 जुलाई 2023, जुलाई (द्वितीय) • कुल पृष्ठ : 8 • मूल्य : 2/- • वर्ष : 46 • अंक : 8

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल
सह-सम्पादक : पीयूष जैन

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये
आर. एन. आई. 31109/77
JaipurCity / 224 / 2021-23

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल व डॉ. संजीवकुमार गोधा की परम्परा का किया जा रहा है निर्वहन...

JAANA का 24वाँ आध्यात्मिक शिविर सानन्द सम्पन्न

जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका के तत्त्वावधान 24वाँ आध्यात्मिक शिविर 2 से 5 जुलाई 2023 तक ऑरलैंडो (USA) में सम्पन्न हुआ। **यह शिविर JAANA के प्रणेता डॉ. हुकमचंद भारिल्ल एवं निर्देशक डॉ. संजीवकुमार गोधा को समर्पित किया गया,** जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती संस्कृति गोधा, जयपुर उपस्थित रहीं।

इस शिविर में प्रात: 8 बजे से रात्रि 9:30 बजे तक अध्यात्म की गंगा प्रवाहित हुई।

शिविर का शुभारम्भ आध्यात्मिकसत्पुरुष कानजीस्वामी के 320वीं गाथा पर हुए वीडियो के साथ हुआ। इस प्रसंग पर डॉ. हुकमचंद भारिल्ल एवं डॉ. संजीवकुमार गोधा के वीडियो प्रवचन का भी प्रसारण किया गया। साथ ही श्री रत्नकरण्ड श्रावकाचार विधान का भव्य आयोजन भी किया गया।

इस अवसर पर पधारे वरिष्ठ विद्वानों में **पण्डित बिपिन शास्त्री, मुंबई** ने 'समयसार' की 183-186वीं गाथा पर अद्भुत मंत्रमुग्ध प्रवचन किये। **डॉ. शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर** ने 'क्रमनियमितपर्याय' पर अपनी अनोखी शैली में प्रवचन किए और इतनी सरलता से समझाया की सभी श्रोता बस सुनते और समझते ही रहे। **पण्डित विपिन शास्त्री, नागपुर** ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार के 'अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग' पर बडी रोचकता से बच्चों के साथ जुड़कर तात्त्विक प्रवचन किए। डॉ. संजीवजी गोधा के स्वर्गवास के बाद JAANA ने शास्त्री विद्यार्थी **पण्डित आर्जव गोधा, जयपुर** को शिविर में प्रवचनार्थ आने का निमंत्रण दिया और उन्होंने बड़ी ही सरलता से 'सुख क्या है?' इस विषय पर संजीवजी के सादृश्य शैली में प्रवचन किए। **डॉ. वीरसागर शास्त्री, दिल्ली** ने ZOOM के माध्यम से स्वाध्याय के महत्त्व को न्यायसंगत तरीके से समझाया। शिविर में 30 से अधिक बच्चे उपस्थित रहे, जिनकी धार्मिक कक्षाएँ आर्जव गोधा, जयपुर ने लीं।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित डॉ. हुकमचंद भारिल्ल स्मृति विशेषांक (शिखरपुरूष), डॉ. संजीवकुमार गोधा विशेषांक (प्रभावना), डॉ. संजीव गोधा की समुद्घात पुस्तक एवं रत्नकरण्ड श्रावकाचार प्रश्नोत्तरी का विमोचन किया गया।

ज्ञातव्य है कि JAANA के निर्देशन में आयोजित होने वाला आगामी 25वाँ आध्यात्मिक शिविर दिनांक 02 जुलाई से 06 जुलाई 2024 तक सम्पन्न होगा।

आइये जानें, क्या है प्रशिक्षण शिविर? सम्पादक की कलम से...

2 प्रशिक्षण शिविर एवं भावभासन परक और जीवनोपयोगी शिक्षण पद्धति

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर : महामंत्री – पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि मेरे सामने एक प्रश्न उपस्थित हुआ कि मंदिर जाने की क्या आवश्यकता है, भगवान की आराधना घर पर भी तो की जा सकती है!

उत्तर सुनिए – मैंने उनसे कहा कि आप घर में रहने वाले सिर्फ चार लोग हैं, तब फिर इतना बड़ा घर क्यों बनाया है? अपने-अपने बेडरूम के अलावा किचन अलग और डाइनिंग रूम अलग। स्टडी रूम अलग और ड्राइंग रूम अलग क्या जरूरत है इन सबकी? सभी काम बारी-बारी एक ही स्थान पर भी तो हो सकते हैं, क्योंकि हम सभी काम एक साथ तो करते नहीं हैं! अरे खाने के समय बेडरूम में बेड पर ही खाना भी तो खाया जा सकता है!

अब डाइनिंग टेबल दिन में सिर्फ दो बार खाना खाने के समय काम आती है और दिनभर फालतू पड़ी रहती है, डाइनिंग टेबल पर ही स्टडी भी हो सकती है! चाय आप बाथरूम में भी बना सकते हैं!

रात को कोई मेहमान तो आते नहीं, ड्राइंग रूम खाली ही पड़ा रहता है, तब वहीं पर गद्दा लगाकर सोया भी जा सकता है न!

पर नहीं! सिर्फ जगह की ही बात नहीं है न! हर स्थान पर अपनी-अपनी उपयोगिता के अनुसार साधन और सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं, वे अन्य स्थान पर नहीं मिलेंगी, तब आप शांति से एक स्थान पर बैठकर अपना काम पूरा नहीं कर सकते हैं, आपको बार-बार उठकर, यहाँ-वहाँ जाकर अपना काम पूरा करना पडेगा, **यथा –**

डाइनिंग टेबल पर भोजन से संबंधित सभी साधन, यथा – कटलरी, नमक-मिर्च, चटनी, पापड़, सलाद, ज्यूस, फ्रूट्स, पानी और सम्पूर्ण भोजन उपलब्ध रहता है और बिना उठे, बिना भाग-दौड़ किये शांति से एक स्थान पर बैठे सबका उपयोग किया जा सकता है। क्या यह सब बेडरूम में संभव है? यदि बेडरूम में भोजन करेंगे तो एक-एक वस्तु के लिए बार-बार उठकर जाना होगा। तब आप सही प्रकार से प्रत्येक वस्तु का आनंद ले भोजन नहीं कर पाएंगे, मात्र दाल-रोटी से काम चलाकर भोजन की खानापूर्ति करनी होगी।

इसी तरह यदि डाइनिंग टेबल पर पढ़ने-लिखने बैठेंगे तो बार-बार किताबें लेने, पैन, नोटबुक, पेपर आदि लेने को उठना होगा, पढ़ने के लिए उपयुक्त लाइट भी नहीं होगी; जबकि स्टडीरूम में सबकुछ आपके हाथ की पहुँच में सहज ही उपलब्ध होता है।

इसी तरह यदि बाथरूम में चाय बनाना चाहेंगे तो चूल्हा, वर्तन, संडासी, दूध-पानी, चायपत्ती-शक्कर और चाय मसाला, कप-प्लेट सारी सामग्री उठाकर बाथरूम में लानी होगी, जबकि किचन में एक हाथ बढ़ाने पर ही वह सब कुछ सहज ही उपलब्ध है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि **हर काम उस स्थान पर करना ही उपयुक्त होता है जो जिस काम के लिए बना है, अन्यत्र वह कई प्रकार की समस्याओं को जन्म देता है और सही प्रकार से सम्पन्न नहीं हो सकता है।**

इसी प्रकार यदि आप घर पर ही भगवान की आराधना करने बैठे और उसी समय यदि कोई मेहमान आजायें तो भजन छोड़कर आपको उन्हें अटैंड करना होगा, तब आपकी आराधना का क्या होगा?

मेहमान के जाने पर आप एक बार फिर बैठे ही थे कि तभी बच्चे को चोट लग गई और वह रोने-चीखने लगे तो भी क्या आप अपनी आराधना जारी रखेंगे या छोड़कर बच्चे को संभालेंगे?

जैसे-तैसे यह रस्म भी पूरी हुई और आप एक बार फिर आराधना के लिए बैठे कि तभी कॉलबेल बज उठी, पत्नी बाथरूम में थी, तो आपको मजबूरन दरवाजा खोलने को उठना ही होगा ना?

आप स्वाध्याय करने बैठे ही होंगे और तभी दूधवाला आ जाये और पत्नी कहे कि प्लीज ज़रा दूध ले लीजिये न! तो क्या आप इंकार करने की हिम्मत रखते हैं? नहीं न! क्योंकि आप बहुत अच्छी तरह जानते हैं कि पत्नी के स्वर भले ही अनुरोध वाले ही हों **पर कौन नहीं जानता है कि अनुरोध का रूप धारण करके आदेश ही अवतरित हुआ है और इसमें ना-नुकुर या आदेश पालन में देरी भी पत्नी की भाषा को कर्कश बना सकती है और उसकी अवहेलना तो किसी भी बड़े काण्ड को जन्म दे सकती है।** इसप्रकार आपको एक बार फिर उठना ही पड़ता है।

हो न हो अब दूध गर्म करने का काम भी यह कहकर आपको ही सौंप दिया जाए कि दूध जरा गैस पर रख दोगे, प्लीज़! ज़रा देखते रहना, कहीं उफन न जाए। तुम फ्री ही तो हो, पूजन वहीं खड़े-खड़े बोल लेना।

इस प्रकार हम पाते हैं कि **किसी भी प्रकार की साधना के लिए घर एक उपयुक्त स्थान नहीं है। साधना के लिए व्यवधान रहित शांति चाहिए और घर है जीवन-संघर्ष का युद्ध-क्षेत्र, वहाँ शांति कहाँ?**

भगवान की आराधना और स्वाध्याय का उपयुक्त स्थान तो जिनमंदिर ही है। यदि हम मंदिर जाकर भगवान की आराधना करते तो उक्त सभी व्यवधानों से सहज ही बच जाते।

इसप्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि हर कार्य उसके उपयुक्त समय और स्थान पर करना ही उचित है।

इतना सुनते ही अब कुछ कहने की आवश्यकता न रही और मेरे मित्र निर्विवाद रूप से इस बात पर सहमत हो गए और **इसप्रकार उन पिता-पुत्र के बीच लम्बे समय से चला आरहा संघर्ष समाप्त हो गया।**

अब आप ही बतलाइये कि क्या फर्क था उनके पिताजी के कहने में और मेरे कहने में? जो बात पिताजी कहते थे वही मैंने भी कही; फर्क बस यही रहा न कि **पिताजी आदेश देकर काम करवाना चाहते थे और मैंने अपने मित्र को भावभासन करवाकर मंदिर जाने की उपयोगिता स्वीकार करवा दी। अब मंदिर जाने का निर्णय मेरे मित्र का स्वयं का था, यहाँ कोई बाध्यकारी आदेश नहीं था।**

इस प्रकार हम पाते हैं कि **जो काम आदेश देने से नहीं होते हैं वे सही समझ से सहज ही हो जाते हैं।** आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पूरा जोर समझ पर है, भावभासन पर है। आज रटने का कोई महत्त्व नहीं है; क्योंकि इससे किसी प्रयोजन की सिद्धी नहीं होती है।

"धर्म तो नाम ही समझ का है" मेरी बात पर ध्यान दीजिये!

''समझकर करने का नहीं'', मात्र 'समझ' का ही नाम धर्म है, करना-धरना तो धर्म में है ही नहीं, कोई कुछ कर तो सकता ही नहीं है। पर-पदार्थों का तो बिल्कुल भी नहीं, और हम हैं कि बस समझना ही नहीं चाहते हैं। समझ के सिवाय हमसे और कुछ भी करवा लीजिये, धर्म के नाम पर हम सब करने को तैयार हो जाते हैं।

हमने अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम में समझ पर ही जोर दिया है, इसमें रटने को कोई स्थान नहीं है। इसप्रकार हम यह कह सकते हैं कि हमारा यह कार्यक्रम एकदम वैज्ञानिक और up to date है।

एक बार आप मात्र 18 दिन का यह कोर्स कर लीजिये, आपके चिंतन का तरीका ही बदल जाएगा, आपके व्यक्तित्व और कार्य प्रणाली में आमूल परिवर्तन हो जाएगा, आप भीड़ का एक हिस्सा नहीं बने रहेंगे वरन् लाखों में एक हो जाएँगे। कहने को तो यह मात्र हमारे पाठ्यक्रम की पुस्तकों को पढ़ाने का प्रशिक्षण है, पर यह व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक है।

आइये अब विस्तार से समझते हैं कि हम प्रशिक्षण में क्या करते हैं –

अपने 18 दिवसीय ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविरों में, जहाँ हम शिक्षकों को हमारा धार्मिक पाठ्यक्रम पढ़ाने का प्रशिक्षण देते हैं, निम्नलिखित बिंदुओं पर जोर देते हैं –

पूर्व ज्ञान - कोई भी विषय पढ़ाये जाने से पहले हम (शिक्षक) इस बात का जायजा लें कि हमारे सामने बैठे विद्यार्थी उक्त विषय के संबंध में अब तक क्या जानते हैं और उनकी मान्यता क्या है?

स्कूल में जब हम आठवीं कक्षा को पढ़ाने जाते हैं तो वहाँ एक बात तय है कि सभी विद्यार्थियों का स्तर एक जैसा ही है; क्योंकि सभी सातवीं क्लास पास करके आये हैं। इसप्रकार हम उनके उक्त पूर्व-ज्ञान के आगे मात्र उतना ही पढ़ाते हैं जितना समझने की क्षमता अभी उनमें है। ऐसा नहीं है कि हम उनके सामने उक्त विषय के बारे में अपना सारा ज्ञान उड़ेल दें, वह भी जो मात्र स्नातकोत्तर (post graduate) स्तर पर पढ़ाया जाना चाहिए।

स्कूल के विपरीत हमारी **पाठशालाओं की स्थिति भिन्न है। यहाँ अलग-अलग उम्र के, अलग-अलग धार्मिक संस्कृतियों और मान्यताओं के, अलग-अलग बौद्धिक एवं ज्ञान के स्तर के विद्यार्थी होते हैं, जिनकी समझने की क्षमता भी भिन्न-भिन्न होती है और संस्कार भी, इसलिए उन्हें पढ़ाने के लिए हमें तत्संबंधी अनेक सावधानियाँ रखने की आवश्यकता होती है।**

स्कूलों में तो जब यह पढ़ाया जाता है कि egg and meet is good food. तब हम पानी छान कर पीने वाले जैन लोग भी उनसे कोई एतराज या विवाद नहीं करते हैं और यही उत्तर याद कर लेते हैं, पर पाठशाला में यदि यह बतलाया जाये कि – सभी द्रव्य भिन्न-भिन्न और स्वतंत्र हैं, इसप्रकार हमारे माता-पिता भी हमारे लिए परद्रव्य हैं, तो हो सकता है कोई आपसे बहस ही करने लगे या कोई आपसे लड़ने-झगड़ने पर उतारू हो जाए या पाठशाला में आना बंद करदे; और तो और यह भी सम्भव है कि आपकी पाठशाला ही बंद करवा दी जाये।

यहाँ आपको सावधानी रखनी होगी कि अभी उन्हें सिर्फ जीव और पुद्गल के बीच की भिन्नता ही बतलायें। मेरा शरीर और आत्मा भिन्न-भिन्न हैं, अपनी आत्मा से अपना ही शरीर भी भिन्न द्रव्य है, मात्र यह स्वीकृत करवायें। अभी तो वे शरीर और आत्मा की इस असमानजातीय द्रव्य-पर्याय को ही ''मैं'' माने बैठे हैं और इस मैं में भी उनकी ममत्व बुद्धि शरीर के प्रति ही है, आत्मा की तो उन्हें खबर ही नहीं है। ऐसे में पर्याय से भी भिन्न भगवान-आत्मा की बात उनसे अभी न करें। यदि वह पाठशाला आते रहे तो एक दिन वह भी आएगा जब वे यह बात समझने के लायक भी हो ही जाएंगे। **(यदि आप भी अब तक यह नहीं जानते हैं और अब जानना चाहते हैं कि किस प्रकार स्वयं अपनी ही पर्याय ''मैं'' नहीं हूँ तो भेदविज्ञान का अध्ययन अवश्य करें)**

उद्देश्य कथन - जब हम किसी विषय की शुरुवात करें तो **सबसे पहले अपने विद्यार्थियों को संक्षेप में, रोचक ढंग से यह बतला दें कि हम क्या पढ़ने-समझने वाले हैं, उक्त विषय हमसे किस प्रकार संबंधित है और उसके जानने से हमें क्या लाभ होगा।** ऐसा करने से विद्यार्थियों में उक्त विषय को जानने की रुचि जागृत हो जाएगी और वे आपकी बात ध्यान से सुनेंगे। जैसे कि यदि हम द्रव्य-गुण-पर्याय के बारे में चर्चा करने वाले हैं तो हम उनसे कह सकते हैं कि –

- आपको मरने से डर लगता है न? सच तो यह है कि आप कभी मरेंगे ही नहीं, आप तो अमर हैं, आप मर ही नहीं सकते हैं। विश्वास नहीं होता है न? तो आइये समझते हैं, कैसे....
- या, क्या आप जानना चाहते हैं कि यह विश्व क्या है और इसमें आपका-हमारा स्थान क्या है? तो आइये...
- या, क्या आप जानते हैं कि हम और भगवान एक जैसे हैं, हममें और उनमें कोई फर्क नहीं है, मैं आज आपको यही समझाऊँगा, कैसे....
- या, आपको हमेशा इस बात का डर बना रहता है न कि कहीं कोई मुझे लूट न ले या कोई मुझे मार न दे तो आज मैं आपका यह डर सदा के लिए दूर कर दूँगा। आइये....

इसप्रकार जब आप उसकी मूलभूत समस्या के हल करने का आश्वासन देते हैं तो न तो वह कहीं जाएगा और न ही आपकी बात सुने समझे बिना आपको कहीं जाने देगा। अब वह न तो क्लास में किसी से बातचीत या लड़ाई-झगड़ा करेगा और न ही आपको डिस्टर्ब करेगा। और तो और यदि कोई अन्य आपको डिस्टर्ब करने की कोशिश करेगा तो वह उसे भी चुप कर देगा।

इसप्रकार आप एक सफल और लोकप्रिय शिक्षक बन जाएँगे।

(यदि आप भी उक्त प्रश्नों के जबाब नहीं जानते हैं और जानना चाहते हैं तो द्रव्य-गुण-पर्याय के स्वरूप का अध्ययन करें)

इसी प्रकार सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए पढ़ें इस शृंखला की तीसरी कड़ी, अगले अंक में.....

(क्रमशः)

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन व पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य व अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app Download करें या Visit करें – www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें – www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- vitragvani vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र – श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

महाविद्यालय के नवीन सत्र का शुभारम्भ....

ग्रीष्मकालीन अवकाश में विशेष प्रभावना

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में 09 जुलाई 23 को अनुभव–गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें विद्यार्थियों ने अपने अनुभव सभी के साथ साझा किया।

गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, खतौली ने की। मुख्य अतिथि के रूप में पण्डित श्रीमन्त शास्त्री, नेज एवं पण्डित ऋषभ शास्त्री, दिल्ली उपस्थित रहे।

गोष्ठी के 11 वक्ताओं ने बताया कि उन्होंने किसप्रकार महाविद्यालय के ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान देशभर के विभिन्न स्थानों में जाकर तत्त्वज्ञान का प्रचार–प्रसार किया तथा किसी भी प्रकार की सुविधाओं की अपेक्षा न रखते हुए पवित्र भावना से प्रभावना का ये सुन्दर व अनुकरणीय कार्य किया। महाविद्यालय के लगभग 70 विद्यार्थियों शिविरों में भाग लेकर विशेष प्रभावना की।

गोष्ठी का संचालन मोहित जैन, फुटेरा व अमन जैन, अलवर तथा मंगलाचरण सहज जैन, छिंदवाड़ा ने किया।

''हम और हमारा महाविद्यालय''

इसी शृंखला में 09 जुलाई को रात्रि में ही साप्ताहिक विचार गोष्ठियों की शृंखला का उद्घाटन '**हम और हमारा महाविद्यालय**' विषय पर आधारित एक विशेष गोष्ठी के साथ किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने महाविद्यालय के उद्भव से लेकर वर्तमान परिस्थितियों तक के सफर को विविध दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया।

गोष्ठी की अध्यक्षता श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर ने की। मंचासीन अतिथियों में श्रीमती कमला भारिल्ल; श्रीमती गुणमाला भारिल्ल; पण्डित जिनकुमार शास्त्री; पण्डित संयम शास्त्री, नागपुर आदि महाविद्यालय के सभी अध्यापकगण उपस्थित थे।

संचालन मयंक जैन, फुटेरा एवं सौरभ जैन, बिलाई एवं मंगलाचरण राहुल जैन, अमायन ने किया।

आभार–प्रदर्शन पण्डित जिनकुमार शास्त्री ने किया।

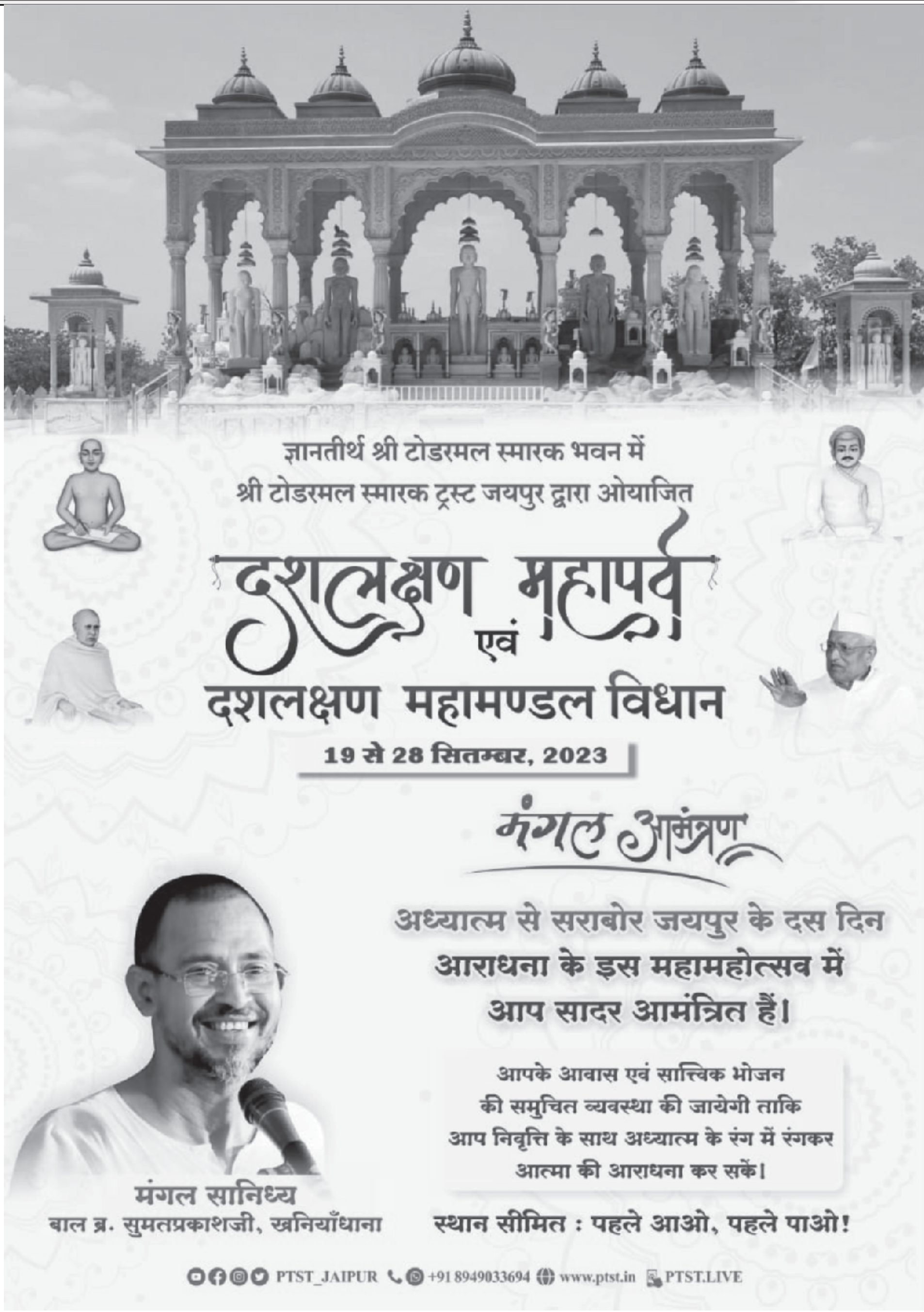

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
सह–सम्पादक : **पीयूष जैन**
प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए– 4 बापूनगर, जयपुर – 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 13 जुलाई 2023

प्रति,

पधारिये ! अवश्य पधारिये !! !! श्री वीतरागाय नमः !! तत्त्वज्ञान का अपूर्व लाभ लीजिये !!

मंगल आमंत्रण

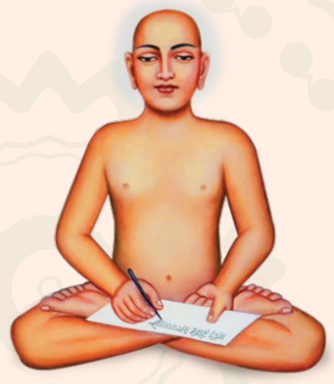

कलिकालसर्वज्ञ आचार्य कुन्दकुन्ददेव

आचार्यकल्प पण्डित प्रवर टोडरमलजी

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर में पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा आयोजित

46वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

रविवार, दिनांक : 13 अगस्त, 2023 से रविवार, 20 अगस्त, 2023 तक

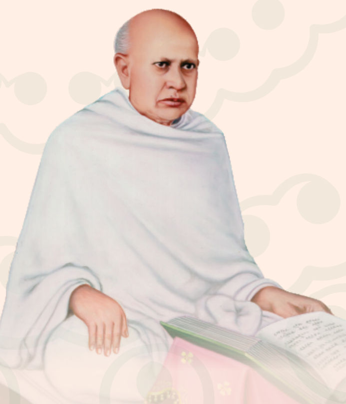

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल

अध्यात्मप्रेमी बन्धुवर, सादर जय जिनेन्द्र एवं शुद्धात्मसत्कार!

आपको सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि राजस्थान की प्रसिद्ध गुलाबी नगरी जयपुर के आध्यात्मिक वातावरण में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सदुपदेश से संस्थापित पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल द्वारा प्रणीत आध्यात्मिक शिक्षण शिविर की शृंखला का 46वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर इस वर्ष रविवार, दिनांक 13 अगस्त, 2023 से रविवार, 20 अगस्त, 2023 तक अनेकानेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में आयोजित होने जा रहा है।

इस अवसर पर पंचास्तिकाय संग्रह महामण्डल विधान का आयोजन किया जाएगा।

शिविर के सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर एवं डॉ. शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर के निर्देशन में सम्पन्न होंगे।

शिविर का ध्वजारोहण एवं उद्घाटन

ध्वजारोहणकर्त्ता
स्व. निहालचन्दजी की स्मृति में श्रीमती अचरजदेवी ओसवाल एवं श्री घेवरचन्द ओसवाल, पीतल फैक्ट्री, जयपुर

शिविर उद्घाटनकर्त्ता
श्री ध्याता बजाज पुत्र श्री प्रेमचन्द बजाज, कोटा

मण्डप उद्घाटनकर्त्ता
श्री सुनील-भावना पुत्र-पुत्रवधु श्री शान्तिलाल-स्नेहलता चौधरी, भीलवाड़ा

मंच उद्घाटनकर्त्ता
श्री तन्मय-चन्द्रा बजाज पुत्र-पुत्रवधु श्री प्रेमचन्द बजाज, कोटा

चित्र अनावरणकर्त्ता
आचार्य कुन्दकुन्द – श्रीमती विमलादेवी-ताराचन्द सौगानी, लाल कोठी, जयपुर
आचार्य धरसेन – श्री सुशील पूनमचन्द सेठी, दिल्ली
पण्डितप्रवर टोडरमलजी – श्रीमती कविता-प्रकाशचन्द छाबड़ा परिवार, सूरत
आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी – श्री कान्तिलाल सिसोदिया व गौतम बागरेचा, सूरत

शिविर व विधान के आमंत्रणकर्त्ता

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता
श्री प्रदीप-कुसुम चौधरी सुपुत्र तिलक, अरिहंत चौधरी परिवार, किशनगढ़
श्री संजयकुमार-रेखा दीवान, सुपुत्र तीर्थेश, कु. मोक्षा दीवान परिवार, सूरत
श्री अशोककुमार-आरती पाटनी परिवार, सिंगापुर
श्री कान्तिभाई मोटाणी परिवार, मुम्बई
श्री सुरेशचन्द-शशि जैन परिवार, शिवपुरी
श्री मुकेशकुमार-बबीता, आकाश-नीलांक्षा, अतिशय, कु. अलेख्या जैन, जैना ज्वेलर्स परिवार, ग्वालियर
श्री सुनील-सारिका जैन, संचित-ध्रुवी, कु. सांची जैन अहिंसा डायमंड एण्ड ज्वेलरी, ग्वालियर

पंचास्तिकाय संग्रह महामण्डल विधान
मुख्य आमंत्रणकर्त्ता
श्रीमती नमिता छाबड़ा, पलक, तरुषी, लक्ष्य छाबड़ा परिवार, जयपुर

आमंत्रणकर्त्ता
श्रीमती लीला-प्रेमचन्द जैन एडवोकेट, दौसा
श्रीमती कविता-प्रकाशचन्द छाबड़ा परिवार, सूरत
श्रीमती निशा-लक्ष्मीचन्द जैन सीकर वाले, जयपुर
श्री वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल, बापूनगर, जयपुर

विद्वत् समागम

बाल ब्र. अभिनन्दन शास्त्री, खनियांधाना	बाल ब्र. सुमतप्रकाश जैन, खनियांधाना
पण्डित अभयकुमार शास्त्री, देवलाली	पण्डित शैलेशभाई शाह, तलोद
श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर	पण्डित बिपिन शास्त्री, मुम्बई
श्री अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल, मुम्बई	डॉ. शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर
डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया, मुम्बई	डॉ. शांतिकुमार पाटील, जयपुर
डॉ. वीरसागर शास्त्री, दिल्ली	डॉ. मनीष शास्त्री, मेरठ
पण्डित कमलचन्द जैन, पिड़ावा	पण्डित अरुणकुमार शास्त्री, बण्ड
पण्डित राजकुमार शास्त्री, उदयपुर	पण्डित पीयूष शास्त्री, जयपुर
डॉ. दीपक शास्त्री 'वैद्य', जयपुर	डॉ. प्रवीण शास्त्री, बांसवाड़ा
डॉ. संजय शास्त्री, दौसा	पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, जयपुर

विशेष कार्यक्रम

ध्वजारोहण एवं उद्घाटन समारोह
रविवार, 13 अगस्त 2023 प्रातः 8:00 बजे
अध्यक्ष : श्री सुशील पूनमचन्द सेठी, दिल्ली
मुख्य अतिथि : श्री सुनील जैन, अक्षत बिल्डर्स, जयपुर

महाविद्यालय सिद्धान्त शास्त्री डिग्री एवं पुरस्कार वितरण समारोह
रविवार, 13 अगस्त 2023 दोपहर 3:00 बजे

अ. भारतवर्षीय दि. जै. विद्वत्परिषद् की विद्वत् संगोष्ठी
सोमवार, 14 अगस्त 2023 दोपहर 3:00 बजे
वर्तमान संदर्भ में विद्वत परिषद् की भूमिका एवं विद्वानों का कर्त्तव्य
● डॉ. प्रेमसुमन जैन, उदयपुर ● अनूपचन्द एडवोकेट, फिरोजाबाद ● डॉ. बी. एल. सेठी, रुडकी ● डॉ. ऋषभचन्द फौजदार, दमोह ● पं. परमात्मप्रकाश भारिल्ल ● डॉ. वीरसागर शास्त्री, दिल्ली ● डॉ. शान्तिकुमार पाटील ● डॉ. अखिल बंसल

महाविद्यालय विशेष संगोष्ठी
रविवार, 20 अगस्त 2023 दोपहर 2:30 बजे
पंचास्तिकाय संग्रह : एक अनुशीलन

परमागम ऑनर्स बाईएनुअल इवेन्ट
रविवार, 20 अगस्त 2023 रात्रि 7:30 बजे
दंसण मूलो धम्मो V/S चारित्तं खलु धम्मो

पंचास्तिकाय परिशीलन : विद्वत् संगोष्ठी

मंगलवाल, 15 अगस्त 2023 (प्रथम सत्र)
अध्यक्ष – डॉ. वीरसागर शास्त्री, दिल्ली संचालक – पण्डित शाश्वत शास्त्री, भोपाल
1. डॉ. संजय शास्त्री, दौसा – आ. कुन्दकुन्ददेव व उनका पंचात्थिकायसंगहो
2. डॉ. ज्योति सेठी, जयपुर – अस्तिकाय का स्वरूप
3. पं. स्वानुभव शास्त्री, खनियांधाना – सत्-असत् का स्वरूप

बुधवार 16 अगस्त 2023 (द्वितीय सत्र)
अध्यक्ष – पण्डित बिपिन शास्त्री, मुम्बई संचालक – पण्डित आकाश शास्त्री, अमायन
1. डॉ. दीपक शास्त्री वैद्य, जयपुर – संसारी व मुक्त जीवास्तिकाय का वर्णन
2. विदुषी विपाशा जैन, उदयपुर – द्रव्य के विभिन्न विभाजन व जानने से लाभ
3. पण्डित अखिल शास्त्री, जयपुर – जीव के कर्तृत्व-भोक्तृत्व का विश्लेषण

गुरूवार, 17 अगस्त 2023 (तृतीय सत्र)
अध्यक्ष – डॉ. श्रेयांश शास्त्री सिंघई, जयपुर संचालक – पण्डित गौरव उखलकर, जयपुर
1. डॉ. गजेन्द्र शास्त्री, भरतपुर – धर्माधर्माकाशास्तिकाय का व्याख्यान
2. पं. संयम शास्त्री, नागपुर – द्रव्यों के विभिन्न विभाजन व जानने का लाभ
3. विदुषी श्रुति शास्त्री, जयपुर – जीव-अजीव पदार्थ का विवेचन

शुक्रवार, 18 अगस्त 2023 (चतुर्थ सत्र)
अध्यक्ष – पं. अभयकुमार शास्त्री, देवलाली संचालक – पं. आदर्श शास्त्री, बरगी
1. डॉ. मनीष शास्त्री, मेरठ – पुण्य-पाप सहित आस्रव पदार्थ का वर्णन
2. पण्डित अनिल शास्त्री, जगतपुरा – मोक्षमार्ग का स्वरूप
3. डॉ. ऋषभ शास्त्री, दिल्ली – चेतना गुण का स्वरूप व द्रव्य से अनन्यपना

शानिवार, 19 अगस्त 2023 (पंचम सत्र)
अध्यक्ष – पण्डित शैलेशभाई, तलोद संचालक – पण्डित अरविन्द शास्त्री, बंडा
1. डॉ. प्रवीणकुमार शास्त्री, इन्दौर – सूक्ष्म परसमय का विश्लेषण
2. पण्डित अमन शास्त्री, लोनी – संवर-निर्जरा व मोक्ष पदार्थ का वर्णन
3. पण्डित जिनकुमार शास्त्री, जयपुर – अरिहंतादि की भक्ति मुक्ति का हेतु है या नहीं

दैनिक कार्यक्रम

प्रातः
5:00 से 5:15 – आध्यात्मिक पाठ
5:15 से 6:00 – प्रौढ़ कक्षा (विभिन्न विद्वानों द्वारा)
6:00 से 6:30 – अरिहंत चैनल पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचन प्रसारण
6:30 से 8:00 – नित्य-नियम पूजन एवं पंचास्तिकाय संग्रह मण्डल विधान
8:30 से 9:15 – आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन (पुरुषार्थसिद्धियुपाय ग्रन्थ पर) एवं मुख्य बिन्दु विवेचन
9:15 से 10:15 – मुख्य प्रवचन : पण्डित अभयकुमार शास्त्री, देवलाली
10.30 से 11.30 – विभिन्न कक्षायें
1. देव-शास्त्र-गुरु (दोहा शतक) – बा. ब्र. सुमतप्रकाश जैन, खनियांधाना
2. तत्त्वार्थसूत्र (9वाँ अध्याय) – पण्डित अरुणकुमार शास्त्री, जयपुर
3. मोक्षमार्ग प्रकाशक (पूर्वार्द्ध) – पण्डित पीयूष शास्त्री, जयपुर
4. रत्नकरण्ड श्रावकाचार (आठ अंग) – पण्डित जिनकुमार शास्त्री, जयपुर

दोपहर
1:45 से 2:15 – विडियो प्रवचन 1) बाबू जुगलकिशोर 'युगल', कोटा
2) पण्डित रतनचंद भारिल्ल, जयपुर
2:15 से 3:00 – दोपहरकालीन व्याख्यान (विशिष्ट विद्वानों द्वारा)
3:00 से 4:15 – पंचास्तिकाय ग्रन्थ पर परिचर्चायें (विशिष्ट विद्वानों द्वारा)
4:30 से 5:30 – विभिन्न कक्षायें
1. क्रमबद्धपर्याय – पण्डित अभयकुमार शास्त्री, देवलाली
2. समयसार (कर्त्ताकर्माधिकार) – डॉ. शान्तिकुमार पाटील, जयपुर
3. परीक्षामुख – 1) डॉ. वीरसागर शास्त्री, दिल्ली
2) डॉ. मनीष शास्त्री, मेरठ
4. लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका – 1) डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया, मुम्बई
2) पं. राजकुमार शास्त्री, उदयपुर

सायं
6:30 से 7:15 – प्रौढ़ कक्षा : डॉ. प्रवीणकुमारजी शास्त्री, बाँसवाड़ा
7:15 से 7:45 – जिनेन्द्र भक्ति
8:00 से 8:45 – प्रथम प्रवचन : विशिष्ट विद्वानों द्वारा
8:45 से 9:30 – द्वितीय प्रवचन : बाल ब्र. सुमतप्रकाश जैन, खनियांधाना

शिविर के स्थाई परम संरक्षक
श्री अजितप्रसाद-सुशीला जैन, सुपुत्र वैभव जैन परिवार, दिल्ली
श्री प्रेमचन्द-सुनीता, सुपुत्र तन्मय-चन्द्रा, ध्याता बजाज परिवार, कोटा
श्री प्रदीप-कुसुम चौधरी, सुपुत्र तिलक, अरिहंत चौधरी परिवार, किशनगढ़
श्री निहालचन्द घेवरचन्द ओसवाल परिवार 'पीतल फैक्टरी' जयपुर
श्री संजयकुमार-रेखा दीवान, सुपुत्र तीर्थेश, सुपुत्री मोक्षा दीवान परिवार, सूरत
श्री महेन्द्रकुमार-कुसुम गंगवाल, सुपुत्र राहुल, विनीत गंगवाल परिवार, जयपुर
श्रीमती रतनप्रभा पाटनी, सुपुत्र अशोककुमार-आरती पाटनी परिवार, सिंगापुर
श्री निशीकान्त जैन परिवार, औरंगाबाद
श्री प्रमोद एवं अरुण मोदी परिवार मकरोनिया, सागर

शिविर के परम संरक्षक
श्री कान्तिभाई मोटाणी परिवार, मुम्बई
श्री अवनीशभाई, जगदीशभाई मोदी परिवार, मुम्बई
श्री अशोककुमार-आशा बड़जात्या परिवार, इन्दौर
श्रीमती मैनादेवी-स्व. पूनमचन्द, सुपुत्र अनिल, सुभाष, सुशील, सेठी परिवार, दिल्ली
श्री गौरव जैन, सुपुत्र परितोषवर्धन-नीलम जैन परिवार जनता कॉलोनी, जयपुर
श्री रमेशभाई मंगलजी मेहता हस्ते श्री निलेशभाई मेहता परिवार, मुम्बई
श्री माणकचन्द जैन 'एडजैल पैनवाले', मुम्बई
श्री नितिनभाई सी. शाह परिवार, मुम्बई
सुश्री सावित्री जैन, दमोह

शिविर के संरक्षक
श्री ताराचन्द जैन, सुपुत्र अनुज जैन, बापू नगर, जयपुर
श्रीमती सुधा ध.प. प्रदीप गोधा परिवार, जयपुर
श्री विपुल-तनुजा कंदी, सुपुत्र केतन-केतकी कंदी, औरंगाबाद

आपके आवास एवं सात्त्विक भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जायेगी। आपके आगमन की सूचना शीघ्र ही प्रेषित करें।

निवेदक
अध्यक्ष — सुशीलकुमार गोदिका
महामंत्री — परमात्मप्रकाश भारिल्ल
एवं समस्त ट्रस्टीगण पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

इस अवसर पर पधारने हेतु आपको हमारा हार्दिक आमंत्रण है

सम्पर्क सूत्र : +91 8949033694 • स्थान : श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर